श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

दिपावली - २०२६

दिपावली साधनाएं - २०२६

धनत्रयोदशी - ०६-११-२०२६ (प्रातः १० के बाद)

नरक चतुर्दशी - ०८-११-२०२६ (प्रातः काल / ब्रह्म मुहुर्त)

लक्ष्मी कुबेर पूजन – ०८-११-२०२६ (वृषब एवं सिंह लग्न)

बलीप्रतिपदा / बहीपूजन - १०-११-२०२६ (मद्यान्न - २:०० तक)

यमद्वितीया / भाईदूज -११-११-२०२६ (सायंकाल - ४:०० तक)

दिपावली पूजन मुहुर्त - ०८-११-२०२६

वृषब लग्न - सायं ६:०७ - सायं ८:०८

सिंह लग्न - मद्यरात्रि १२:३२ - रात्रि २:३९

साधना नियमों के लिए यहाँ दबाएँ |

साधक, किसी भी साधना के पूर्व गुरु पूजन अवश्य संपन्न करें।

१) धनत्रयोदशी साधना:-

इस दिन (अमृत या महेन्द्र काल) में कुबेर साधना, धनवंतरी साधना, इंद्राक्षी एवं इंद्र साधना, विदेश गमन प्रयोग आदि कर सकते हैं | जिनका विवाह हुआ है, वे दंपति " तात्रोक्त गुरु साधना से अखण्ड लक्ष्मी प्राप्ति " साधना संपन्न करे |

(अ) व्यापार द्वारा धन प्राप्ति (धनत्रयोदशी साधना):-

कुबेर यंत्र की पूजा कर, पीली हकीक माला से निम्न मंत्र की ११ माला जप करने से व्यापार में वृद्धि होगी। पूजन में पंचामृत आदि के साथ तिलक हेतु केसर का प्रयोग करे |

मंत्र:- || ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं क्रीं श्रीं कुबेराय अष्टलक्ष्मी मम गृहे धन पूरय पूरय नमः||

सामग्री: कुबेर यंत्र, पीली हकीक माला

वस्त्र: पीले वस्त्र

दिशा: पूर्व दिशा

जप संख्या: ११ माला

(आ) धनत्रयोदशी (तांत्रोक्त) लक्ष्मी विधी:-

इस दिन बाजार से धनिया के बीज (मुठ्ठी भर) लाकर, गोमती चक्र के साथ घर में, तिजोरी में रखने से धन की वृद्धि होती है.

दीवाली के पांच दिन बाद उन बीजो को मिट्टी में बिखेर दे या घर के आंगन में डाल दे, और गोमती चक्र को घर के तिजोरी में लाल अथवा पिले कपडे में बांध कर ३ माह (९० दिन) तक रखे, बाद में बडे पेड के नीचे या तालाब में डाल दे (विसर्जित करे).

(इ) कुबेर साधना (धनत्रयोदशी):-

यह प्रयोग व्यापारी, लेन-देन, गोदाम रखने वाले लोग / व्यापारी आदि कर सकते है | इस प्रयोग में साधक कुबेर यंत्र के सामने पीली हकीक माला या कमलबीज की माला से निम्न मंत्र की ११ माला जप करे । यह प्रयोग, दो समय करना चाहिये (प्रातः एवं सायं काल) |

मंत्र:- || ॐ वित्तेश्वराय स्वाहा ||

सामग्री: कुबेर यंत्र, पीली हकीक माला / कमलबीज माला

वस्त्र: पीले वस्त्र

दिशा: पूर्व दिशा

जप संख्या: ११ माला

(ई) श्री प्रयोग:-

धनत्रयोदशी से लेकर भाईदूज तक यदि साधक नित्य, (पांचों दिन) श्री यंत्र की पूजन करे निम्न कमला मंत्र की १६ माला जप करे तो लक्ष्मी स्थई रूप से घर में निवास करती है |

मंत्र:- || ॐ श्रीं कमलवासिन्यै नमः ||

सामग्री: लक्ष्मी माला या कमलबीज माला

वस्त्र: पीले वस्त्र

दिशा: पूर्व दिशा

जप संख्या: १६ माला

(उ) श्री मुद्रिका प्रयोग:-

यदि साधक के पास श्री यंत्र मुद्रिका हो तो, उस मुद्रिका पर त्राटक करते हुए ७ मिनटो तक " श्रीं " मंत्र जप करने से साधक के नेत्रो में एवं व्यक्तित्व में लक्ष्मी प्रभाव देखने को मिलता है | यह प्रयोग भी पांच दिन करना होता है |

२) नरक चतुर्दशी प्रयोग:-

ब्रह्म मुहुर्त मे उठ कर स्नानादि से निवृत होकर गुरु,कुल देवता एवं लक्ष्मी-नारायण की पुजा करे और अंत में निम्न मंत्रो से यम देवता को तर्पण दे | पिता जीवित हो तो अक्षत, नही तो तील से तर्पण करे |

|| ॐ यमं तर्पयामि ||

|| ॐ धर्मराजं तर्पयामि ||

|| ॐ मृत्युं तर्पयामि ||

|| ॐ अंतकं तर्पयामि ||

|| ॐ वैवस्वतं तर्पयामि ||

|| ॐ कालं तर्पयामि ||

|| ॐ सर्वभूतक्षरं तर्पयामि ||

|| ॐ औदुंबरं तर्पयामि ||

|| ॐ दध्नं तर्पयामि ||

|| ॐ नीलं तर्पयामि ||

|| ॐ परिमेष्ठिनं तर्पयामि ||

|| ॐ वृकोदरं तर्पयामि ||

|| ॐ चित्रं तर्पयामि ||

|| ॐ चित्रगुप्तं तर्पयामि ||

बाद में निम्न श्लोक ११ बार पढे |

यमोनिहंता पितृधर्मराजो वैवस्वतो दण्डधरश्च काल: |

भूताधिपो दत्त कृतानुसारी कृतांत एतद्दशभिर्जपंति ||

उपरि विधान करने समय अपने सामने लाल कपडे पर तांत्रोक्त नारियल लाल कपडे पर स्थापित करे और उसकि पूजा लाल वस्तुओ से (अक्षन्त,कुंकुम,लाल पुष्प,लाल फल) करे और तिधि उपरान्त इस नारियल को किसी ब्रह्मण को दान में दे तो अपमृत्यु का नाश होता है |

३) दिपावली साधना:-

इस दिन साधक यदि घर में कनकधारा, कुबेर एवं श्री यंत्र की तीनो या कोई एक भी हो, तो उस यंत्र की पूर्ण पूजन कर १६ पाठ श्री सूक्त की १६ पाठ करे तो लक्ष्मी वर्ष भर घर में निवास करती है |

अथ श्रीसूक्तम्

॥ श्री गणेशाय नमः॥

त्वं श्रीरूपेन्द्रसदने मदनैकमाता,
ज्योत्स्नासि चन्द्रमसि चन्द्रमनुहरास्ये।
सूर्ये प्रभासितजगत्रितये प्रभासि,
लक्ष्मीं प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥

त्वं जातवेदसि सदा दहनात्मशक्तिर्वेधास्त्वया,
जगदिदं विविधं विदध्यात्।
विश्वम्भराऽपि बिभृयादखिलं भवत्या,
लक्ष्मीं प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥

कांसोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥

चन्द्राप्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।

तां पद्मिनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्म्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥५॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोथबिल्वः ।

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्चबाह्या अलक्ष्मी : ॥६॥

उपैतु मां देव सखः कीर्तिश्च मणिना सह ।

प्रादुर्भूत: सुराष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।

अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात् ॥८॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।

ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥

मनस: काममाकूर्ति वाचः सत्यमशीमहि ।

पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्द्दम ।

श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥

आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।

नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ॥
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मी जातवेदो म आवह ॥१३॥

आर्द्रा यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्याहिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥

ता म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्यो श्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तै पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

४) बली प्रतिपदा / बही पूजन:-

वर्ष के साडे तीन श्रेष्ठ मुहुर्त मे, यह एक श्रेष्ठ मुहुर्त है (प्रातः सूर्योदय से सूर्यास्त तक) । इस दिन व्यापारि नये बहि खाते लाते है और उनकी पूजन कर व्यापार आरंभ करे | इस दिन पति अपने पत्नी को एवं बेटियों को (घर के स्त्रीयों को) लक्ष्मी का रूप मान कर उनका संमान कर, भेट आदि से उन्हे प्रसन्न करे |

यह भी एक श्रेष्ठ लक्ष्मी प्रयोग है.

५) भाई दूज / यम द्वितीया:-

इस दिन भाई अपने बहनो को भेट आदि सें प्रसन्न करते है, ताकी लक्ष्मी कृपा उन पर बनी रहे |

इसी दिन प्रातः काल यम तर्पण की विधि भी पूर्ण करे। इस विधान से, घर में लक्ष्मी का क्षय नही होता है और आरोग्य-ऐश्वर्य की प्राप्ती होती है |

****